कलीसिया अध्याय 14

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **गलातियों 1-4**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (गलातियों 1-4) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह की तैयारी]* **(2) आमोस 3:3**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) समान जीवन लक्ष्य : आमोस 3:3। यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों तो क्या वे एक संग चल सकेगें?

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 5:1-47**

परिचय। मिलकर **यूहन्ना 5:1-47** से बाइबल अध्ययन करने के लिए अध्ययन करने के पाँच तरीकों का इस्तेमाल करें।

यूहन्ना 5:1-16, यहूदियों द्वारा,यीशु मसीह, उसके द्वारा कहे गये वचनों तथा यहूदा के बेतहसदा में हुए चमत्कार को अस्वीकार किये जाने के बारे में बताता है। यूहन्ना 5:17-30 परमेश्वर पिता के सन्दर्भ में यीशु मसीह के दावों का बखान करता है। यूहन्ना 5:31 -47 में यीशु मसीह की साक्षी के बारे में बताया गया है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक **साथ मिलकर** यूहन्ना 5:1-47 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

5:17-23

खोज 1. यीशु मसीह के दावे।

यीशु मसीह ने अपने बारे में बहुत से दावे किये जिन्हें यहूदियों ने भी स्वीकार किया।

(1) यूहन्ना 5:17-18 में, यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर पिता के समानता में है।

यीशु परमेश्वर को अपना पिता कहा। यहूदी लोग तुरन्त समझ गये कि यीशु परमेश्वर को पिता कहने के द्वारा अपने आपको परमेश्वर के तुल्य या समानता में दिखा रहा है जो कि अपने आपको परमेश्वर के जैसा ठहराने के जैसा है। वे समझ गये कि यीशु ने दावा किया है कि वह परमेश्वर पिता के बराबर है। यीशु मसीह के द्वारा यह दावा करना या तो परमेश्वर के विरूद्ध की जाने वाली सबसे बढ़ी निन्दा थी या फिर यह अति अद्‌भुत सच्चाई थी, जिसे विश्वास के द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के पास एक ही प्रकार का ईश्वरीय स्वभाव है। इसी कारण यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर पिता के समान है। यही मुख्य कारण था कि यहूदी उसे घात करना चाहते थे।

यहूदी लोग, यीशु की सबत का उल्लंघन करने की वजह से भी हत्या करना चाहते थे। यहूदी लोगों का मानना था कि सबत के दिन में कोई भी काम नहीं किया जाना चाहिए और वे इस दिन में किये गये सारे कामों को गलत मानते थे। लेकिन यीशु ने कहा कि अगर यह सत्य है तो यहूदी लोग परमेश्वर को भी सबत का दोषी ठहराते हैं, क्योंकि स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर हमेशा अपनी सृष्टि और अपने लोगों की सुरक्षा करने के लिए कार्यरत रहते हैं, "निष्क्रिय" नहीं बैठते। परमेश्वर कभी "निष्क्रिय" बनकर काम करना बन्द नहीं करते। वह सदैव सृजे गये संसार व लोगों की उनके पापों से लगातार सुरक्षा करते हैं। इसी प्रकार से, पुत्र भी, जिसका रिश्ता परमेश्वर पिता के साथ सबसे घनिष्ठ है, वही काम करता है जो उसके पिता करते थे। पद 17 में, यीशु कहते हैं कि, मेरा पिता अब तक काम करता है,और मैं भी करता हूँ।" यीशु मसीह द्वारा कही गयी बात का अर्थ यह था कि अगर सतब के दिन का उल्लंघन करने का आरोप पुत्र पर लगाया जा रहा है, तो वे परमेश्वर पिता को भी सबत का उल्लंघन करने का दोषी ठहरा रहे हैं क्योंकि पिता और पुत्र समान हैं।

(2) यूहन्ना 5:19-22 यीशु ने दावा किया कि काम के मामले में वह पिता के समान है।

वह कहता है, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता,केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। " जो प्रतिक्रिया पिता के द्वारा उत्पन्न होती है वह प्रत्यक्ष में पुत्र के द्वारा प्रगट होती है। पुत्र वही देखता है जो पिता उस पर प्रगट करता है और फिर पुत्र पिता की मनसा को सुनने योग्य शब्दों व प्रत्यक्ष कार्यों में प्रगट करता है। पुत्र, पिता कि इच्छा को स्वीकार करता, समझता और फिर वह उसे कार्यान्वित करता है।

यीशु ने यहूदियों को विश्वास दिलाया कि उसके पास सबत के दिन केवल विक्लागों को चंगा करने से बढ़कर काम का अधिकार है । जब वे लोग उसके द्वारा पहले ही किये कार्यों को देखकर अचम्भित थे, तो जो कार्य वह भविष्य में दिखाने वाला था उन्हें देखकर तो गहन विचार करना स्वाभाविक था। ऐसी दो घटनाओं पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है: अर्थात शारीरिक व आत्मिक मृतक लोगों को जीवन देने, तथा न्याय करने पर। यीशु ने कहा," जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।" यीशु ने यह नहीं कहा कि वह एलिय्याह व एलिशा के समान लोगों को जीवित करने के लिए परमेश्वर के हाथों में केवल एक उपकरण के जैसे काम करते। वरन वह दावा करता है कि उसके पास मुर्दों को जीवित करने का अधिकार है, और वह भी न केवल धरती के नश्वर जीवन के लिए, वरन आने वाले अनन्त जीवन के लिए जीवित करने का अधिकार है। उसने दावा किया कि जिस प्रकार से पिता के पास अभी आत्मिक रूप से मृतक लोगों को आत्मिक जीवन देने का और शारीरिक रूप से मृतक लोगों को भविष्य में पुनरूत्थान के दिन नयी शारीरिक देह प्रदान करने का अधिकार है,वैसे ही अधिकार उसके पास भी हैं।

यीशु ने यह भी दावा किया कि, पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया गया है"। सम्पूर्ण पुराने नियम में परमेश्वर को "सारी पृथ्वी के न्यायी के रूप में" जाना गया है(उत्पत्ति 18:25)। उसका न्याय लगातार लोगों के व्यक्तिगत जीवन व राष्ट्रों को प्रभावित करता था। अन्त के समय में एक बार निर्णायक न्याय का होना तय है। यीशु ने यह भी कहा कि अन्तिम न्याय करने का अधिकार उसे दिया गया है। वास्तव में कहा जाये तो, यीशु ने कहा कि परमेश्वर पिता ने न्याय करने का सारा अधिकार परमेश्वर पुत्र को सौंप दिया है, ताकि जिस प्रकार से परमेश्वर पिता को आदर व सम्मान मिलता है ठीक उसी प्रकार से परमेश्वर पुत्र को भी आदर मिले।

(3) यूहन्ना 5:23 में यीशु ने दावा किया कि सम्मान व आदर के क्षेत्र में वह पिता के समान है।

वह कहता है " कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता,वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।" फिलिप्पियों 2:9-11 में, मृत्यु तक विश्वासयोग्य बने रहने के कारण परमेश्वर पिता ने उसे ऐसा नाम दिया है जो सारे नामों में श्रेष्ठ है, कि हर एक घुटना उसके आगे टिके और हर एक जीभ अंगीकार करे कि यीशु ही प्रभु है(ग्रीक :कुरिओस)। यशायाह 45:22 के अनुसार इस प्रकार का सम्मान या आदर केवल परमेश्वर का ही किया जाता है(इब्री: यहावेह, ग्रीक :कुरिओस)। अत: जब यीशु मसीह यह आदर प्राप्त करते हैं तो परमेश्वर की महिमा में कोई कमी नहीं आती या वह किसी और को नहीं दी जाती। वरन परमेश्वर की महिमा में और भी बढ़ौतरी होती है, क्योंकि यीशु मसीह "परमेश्वर पिता की महिमा करने के लिए ही" इस आदर सम्मान को प्राप्त करते हैं"(फिलिप्पियों

2:11)। जब कभी परमेश्वर पुत्र को महिमा मिलती है, परमेश्वर पिता का आदर होता है। जब कभी लोग यीशु मसीह के सामने घुटना टेकते और अपनी जीभ से अंगीकार करते हैं कि यीशु मसीह ही प्रभु है, परमेश्वर पिता को महिमा मिलती है।

5:30-47

खोज 2. यीशु मसीह के समबन्ध में गवाहियां

पद 31 में, यीशु कहते हैं,हालांकि वह अपने बारे में जो कुछ कहते हैं वह सत्य है लेकिन यहूदियों की संस्कृति के हिसाब से अपनी गवाही मान्य नहीं है। निश्चय ही, इस धरती पर अपनी ही गवाही मान्य नहीं होती है। कोई भी जन इस धरती पर अपने ही हस्ताक्षर को मान्यता प्रदान नहीं कर सकता। यदि यीशु मसीह बिना पिता द्वारा अधिकार प्राप्त किये अपने अधिकारों का दावा करते तो,कोई भी जन उसके अधिकारों को मानने के लिए तैयार नहीं होता। इसके बावज़ूद भी यीशु मसीह की अपने सम्बन्ध में दी गयी गवाही सच्ची थी,क्योंकि उसकी गवाही का पुष्टिकरण स्वयं परमेश्वर पिता की गवाही ने किया था(यूहन्ना 8:13-18)। फिर भी, यहूदी लोग यीशु मसीह के दावों की विश्वसनियता को मानने से इनकार करते रहे, क्योंकि वे इसे अवैध मानने थे। इस कारण, यीशु मसीह ने अन्य पांच महत्वपूर्ण गवाहों को अपनी ओर से पेश किया! और यहूदी लोग इन गवाहों को किसी रीति से अस्वीकार नहीं कर सकते।

(1) स्वयं परमेश्वर पिता की गवाही।

यूहन्ना 5:19,30, यीशु ने परमेश्वर पिता को अपने एक गवाह के रूप में पेश किया। उसने कहा कि पुत्र अपने आप से कुछ नहीं करता। वह केवल वही करता है जो वह पिता को करते हुए देखता है। अनन्त काल से, परमेश्वर पिता व परमेश्वर पुत्र के रिश्ते को इसी आधार पर देखा जाता है कि पुत्र अपने पिता की इच्छा को पूरा करता, जो पिता से सुनता वही बोलता, पिता के समान ही न्याय करता और सारी बातों में पिता को प्रसन्न करने का प्रयास करता है। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच रिश्तों के इन अपरिवर्तनीय सिद्धान्तों व कार्यों के आधार पर यीशु मसीह अपने प्रमाणों को सुरक्षित रूप में परमेश्वर के हाथों में सौंप सकते हैं। और परमेश्वर पिता निश्चय ही पुत्र को निर्दोष ठहराता और उसके लिए प्रत्ययपत्र प्रदान करता है।
पद 32 में , यीशु ने "अन्य गवाह" को पेश किया। 36-37 पद में हम जानते हैं कि उसका यह गवाह परमेश्वर पिता थे। परमेश्वर पिता तीन तरीकों से यीशु मसीह की गवाही देता है।

- पुराने नियम के वचनों में
- उसके देहधारण के समय पर सीधा स्वर्ग से आकाशवाणी के द्वारा
- और परमेश्वर पिता द्वारा परमेश्वर पुत्र को पूरा करने के लिए दिये गये कामों के द्वारा।

सभी निम्नलिखित गवाह परमेश्वर पिता की गवाही के अधीन हैं।

(2) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही।

यूहन्ना 5:33-35 में, यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अपने गवाह के रूप में पेश किया। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बुलाहट और उसके जीवन का मकसद ज्योति के विषय में गवाही देना था(यूहन्ना 1:7)। यरूशलेम से आने वाले यहूदी प्रतिनिधि मण्डल के सामने उसने गवाही दी कि,"सच्ची ज्योति जो जगत में आकर सबको जीवन देने पर थी, वह यीशु है", कि,"जिस आने वाले परमेश्वर का रास्ता वह तैयार कर रहा है, वह यीशु ही है"(यशायाह 40:3;मरकुस 1:3), कि वह "परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पापों को अपने ऊपर उठा लिये जाता है", कि वह "पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है" और वह "परमेश्वर का पुत्र है"(यूहन्न 1:7,7,23,29,33,34)! यूहन्ना खुद तो ज्योति नहीं था, लेकिन वह ज्योति धारक या दीपक था, जिसने लोगों के ध्यान को यीशु की ओर आकर्षित किया। यूहन्ना ने अपनी ज़िम्मेदारी को बखूबी पूरा किया। अब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही को प्रमाणित करने तथा उसकी गवाही से ज़्यादा प्रकाश डालने के लिए स्वयं वह ज्योति मनुष्यों के सामने प्रगट थी।

(3) यीशु के कार्यों की गवाही।

यूहन्ना 5:36 में, यीशु ने अपने कामों को पेश किया, जिन्हें परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र को करने के लिए दिये थे, जो उसके गवाह भी थे। परमेश्वर पिता द्वारा यीशु मसीह को दिये जाने वाले काम निम्न थे:

- उसने देहधारण के द्वारा अदृश्य परमेश्वर को इस संसार में प्रगट किया।
- उसने मृत्यु व पुनरूत्थान के द्वारा वह लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित[1] किया और परमेश्वर से लोगों का मेल मिलाप[2] करवाता है।
- उसके उठा लिये जाने तथा सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा परमेश्वर के राज्य की स्थापना करता है।

यीशु द्वारा किये गये उसके अन्य व्यक्तिगत कार्य, जैसे प्रचार करना, शिक्षा देना, चंगाई देना, छुटकारा इत्यादि,अउपरोक्त कामों में ही सहयोग प्रदान करते हैं। उसके द्वारा किये जाने वाले चमत्कार वे चिन्ह थे जो परमेश्वर की वास्तविकता और उसके उद्धार के कामों को प्रगट करते हैं। ये सारे चमत्कार इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण थे कि परमेश्वर पिता ने ही यीशु मसीह को भेजा और इन कामों को स्वीकृत किया है।

(4) धर्मशास्त्र की गवाही।

यूहन्ना 5:39-40 में, यीशु ने पुराने नियम के वचनों को ही गवाह के रूप में पेश किया। यीशु कहते हैं कि हालांकि यहूदियों के पास व्यवस्था है,लेकिन वचन उनके हृदयों में लिखा हुआ नहीं है। हालांकि उनके पास पुराना नियम है, लेकिन वे विश्वास या वचन का अपने जीवन में पालन नहीं करते। हालांकि पुराना नियम बहुत स्थानों पर आने वाले मसीह अर्थात यीशु मसीह के बारे में बताता है, लेकिन यहूदी लोग उसे मसीह के रूप में न तो स्वीकार करते और न ही उसके पास अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए आते हैं।

लूका 24:27 और 44 में, यीशु अपने चेलों को बताते हैं कि पुराने नियम में उसके बारे में क्या लिखा गया था। और 2तीमुथीयुस हमें बताता है कि पवित्र शास्त्र किसी भी व्यक्ति को उद्धार के निमित्त बुद्धिमान बना सकता है और वह उद्धार केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने से होता है। यहूदी शिक्षकों ने कई बार अपनी पुस्तकों में लिखा है कि पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने से आने वाले युग में जीवन का रास्ता मिलता है। नये नियम में रोमियों 10:14 इस बात की पुष्टि करता है कि जीवन यीशु मसीह में ही है जो "व्यवस्था का अन्त है", अत: जो कोई उस पर विश्वास करता है धर्मी ठहर चुका है।

(5) मूसा की गवाही।

यूहन्ना 5:45-47 में, यीशु ने मूसा को अपने गवाह के रूप में पेश किया। यहूदी लोग मूसा को अपने सबसे बढ़े नबी के रूप में मानते हैं। लेकिन, यीशु कहते हैं कि यहूदियों ने मूसा की लिखी हुई बातों को भी नहीं माना। व्यवस्थाविवरण 18:15 में मूसा ने भविष्यवाणी की कि,"तेरा परमेश्वर तेरे मध्य से,अर्थात तेरे भाईयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा, तू उसी की सुनना"(प्रेरितों 3:22-23)। मूसा ने स्वयं यह भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर ने सभी लोगों को आज्ञा दी है कि वे आने वाले मसीह की सुनें। लेकिन, बैरी यहूदियों ने यीशु को मसीह के रूप,परमेश्वर की आवाज़ और परमेश्वर के अवतार में स्वीकार नहीं किया। उनके कठोर हृदयों ने यीशु को मसीह तथा परमेश्वर का पुत्र मानने से इनकार कर दिया।

कदम 3. प्रश्न. **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 1:1-18 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

5:8

प्रश्न 1. वह लकवा का रोगी तुरन्त चंगा क्यों हो गया?

ध्यान दें।

कोई भी लकवाग्रस्त व्यक्ति अपने आप हिल नहीं सकता,खड़ा नहीं हो सकता या किसी चीज़ को उठा या चल नहीं सकता। इस व्यक्ति की शिकायत यह थी कि जब नियत समय पर पानी हिलाया जाता था तो उसे उस कुण्ड के पानी में उतारने वाला कोई व्यक्ति नहीं होता था। तब यीशु ने उस लवका ग्रस्त व्यक्ति से कहा,"उठ अपनी खाट उठा और चल फिर" यह उस व्यक्ति के लिए एक बहुत बड़ी चुनौति थी जिसने अभी अभी अपनी असमर्थता के बारे में बताया था।

लेकिन, यीशु कभी भी ऐसा काम करने की आज्ञा नहीं देते जिसे करना लोगों के लिए नामुमकिन हो। जब यीशु बोलते या आज्ञा देते हैं, इसका अर्थ है कि वह चाहते हैं कि ऐसा ही हो। उसके मुँह से निकला हर शब्द शक्तिशाली और प्रभावशाली होता है(मत्ती 4:4)। इस स्थान पर, यीशु मसीह चाहते थे कि वह लकवा ग्रस्त व्यक्ति पुन: चलने लगे।

लकवाग्रस्त व्यक्ति ने यीशु मसीह के शब्दों पर भरोसा किया। यह दर्शाने के लिए कि उसने उसकी विश्वास किया है उसने यीशु का कहा मान लिया(इब्रानियो 11:6-8)। लकवाग्रस्त व्यक्ति तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।

[1] प्रायश्चित करना। प्रायश्चित का बलि पाप के विरूद्ध परमेश्वर के क्रोध को दूर करके परमेश्वर और मनुष्य के बीच खड़े पाप को हमेशा के लिए मिटा डालता है। प्रायश्चित का बलिदान समस्या (पाप) को खत्म कर देता है।

[2] मेल मिलापं। प्रायश्चित का बलिदान दो अलग हुए पक्षों को एक रिश्ते में पुन: जोड़ देता है।

प्रायश्चित का बलिदान समस्या के परिणाम को मिटा डालता है(अर्थात परमेश्वर और मनुष्य के बीच हुए अलगाव को) यशायाह 59:1-

वह लकवे का रोगी इसलिए चंगा हुआ क्योंकि यीशु ने शक्तिशाली और प्रभावशाली वचनों को बोला, और क्योंकि उस बीमार व्यक्ति ने उसके के वचनों पर विश्वास किया (दूसरा कारण पहले कारण पर निर्भर है)। इस बीमार व्यक्ति की चंगाई धीरे धीरे या अधूरी चंगाई नहीं वरन तुरन्त व पूर्ण चंगाई थी। इस घटना के द्वारा एक बार फिर से यीशु की महिमा प्रगट हुई।

5:24-25

प्रश्न 2. पुत्र किस तरह से मृतकों को जीवन प्रदान करता है?

ध्यान दें।

(1) यीशु का वचन व्यक्ति को विश्वास करने में मदद करता और जीवन प्रदान करता है।

यूहन्ना 5:24 में यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र कहता है कि,"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है,अनन्त जीवन उसका है और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। यीशु मसीह अपने वचनों के द्वारा लोगों को जीवन प्रदान करते हैं।"उसका वचन" इस संसार को दिया जाने वाला सम्पूर्ण संदेश है। वह उसके वचनों को अपने पिता के अधिकार में होकर बोलता है । लकवा ग्रस्त व्यक्ति की चंगाई की यह घटना इस बात का "एक चिन्ह" है कि यीशु अपने शब्दों द्वारा किस प्रकार लोगों को आत्मिक जीवन प्रदान करता है। लकवाग्रस्त व्यक्ति ने यीशु मसीह के शब्दों द्वारा चंगाई प्राप्त की, जिसने उसे विश्वास और खड़े होने की शक्ति प्रदान की। इसी प्रकार से यीशु मसीह के वचनों द्वारा लोग आत्मिक चंगाई को प्राप्त करेगें जो जीवन प्रदान करते हैं।

(2) यीशु मसीह के वचन, पवित्र आत्मा को काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।

यूहन्ना 5:25 में यीशु ने कहा,"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब भी है जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जिएंगे।" "मृतकों" से पुन: जीवित होने की उम्मीद कैसे की जा सकती है? यहेजकेल 37:4 में भविष्यद्वक्ता कहता है,"हे सूखी हड्डियों, परमेश्वर का वचन सुनों!"और चारों दिशाओं से परमेश्वर की श्वासं उन मृतक शरीरों में प्रवेश कर गयी और वे सब परमेश्वर की आवाज़ को सुनकर उठ खड़े हुए। यहाँ यूहन्ना में परमेश्वर का वही आत्मा आत्मिक रूप में मृतक लोगों को यीशु की आवाज सुनने में और अनन्त जीवन में प्रवेश करने में सहायता करता है।

(3) यीशु का वचन केवल उन्हीं के पास पहुँचता है जिन्हें वह अपने सर्वश्रेष्ठ तरीके से चुनता है।

वे कौन से मृतक लोग हैं जो उसकी आवाज़ को सुनकर जिएंगे? यूहन्ना 5:21 में मसीह कहता है कि वह जिससे प्रसन्न होता है उसे जीवन देता है। यीशु मसीह उसे जीवन प्रदान करते हैं जिसे वह अपने सर्वश्रेष्ठ तरीके से जीवन देने के लिए चुनते हैं। पवित्र आत्मा उन्हें परमेश्वर की आवाज़ सुनने और उन्हें पुन: जीवन प्राप्त करने में सहायता करेगा।

5:26

प्रश्न 3. पुत्र अपने आप में जीवन रखता है, इसका क्या अर्थ है?

ध्यान दें।

परमेश्वर पिता को छोड़ और किसी के पास यह *अपने आप में जीवन* नहीं है, क्योंकि वह ही एकमात्र अजन्मा और असृजा गया है। वह अपने आप में जीवित परमेश्वर और पूरी तरह से आत्म-पर्याप्त है। लेकिन अब यीशु ने कहा,"क्योंकि जिस रीति से पिता *अपने आप में जीवन रखता है*,उसी रीति से उसने अपने पुत्र को यह अधिकार दिया है कि वह *अपने आप में जीवन रखे।*" अनन्तकाल से ही परमेश्वर पिता ने अपने आप में जीवन रखने का विशेषाधिकार परमेश्वर पुत्र को दिया है। "इकलोते पुत्र" का यही अर्थ है। यीशु मसीह इकलौता पुत्र है,रचा गया पुत्र नहीं है। अभिव्यक्ति "इकलौता पुत्र" मानवीय संसार की किसी भी चीज़ से सम्बन्धित नहीं है। यह भूतकाल में हुई किसी शुरूआत की ओर ईशारा नहीं करती। यह एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो त्रीएकता में यीशु के पुत्र होने की भूमिका को व्यक्त करती है।

यूहन्ना 3:16 इस बात को साबित करता है कि देहधारण करने से पहले भी यीशु मसीह पिता का इकलौता पुत्र था। परमेश्वर पिता ने *अपने आप में जीवन धारण* करने की आशीष परमेश्वर पुत्र अर्थात यीशु मसीह को उसके देह धारण करने या बपतिस्मे के समय नहीं प्रदान की थी। यह एक अनन्त प्रतिक्रिया और पिता-पुत्र के रिश्ते का एक अनोखा हिस्सा है जो आदिकाल से ही विद्यमान है। आलौकिक क्रम में, परमेश्वर पिता ने अपने आप में जीवन अपने पुत्र को प्रदान किया है, और लौकिक क्रम में,पुत्र धरती पर रहने वाले लोगों पर इस जीवन को प्रगट करता है। 1यूहन्ना 1:2 में परमेश्वर पुत्र को अनन्त जीवन के अवतार के रूप में चित्रित किया गया है जो "पहले पिता में था और अब हम पर प्रगट किया गया है"। मानव

जाति और अन्य जीव जन्तु सृजे जाने की वजह से इस *अपने आप में जीवन* से वंचित हैं। उनका जीवन अपने सृष्टिकर्ता अर्थात परमेश्वर द्वारा संचालित है।

कदम 4. **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 5:1-47 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना अध्याय 5 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

5:1-7. "बेतहसदा"(अरामिक में: बैत हीसदा)का अर्थ "कृपा का घर है", लेकिन उस कुण्ड पर बीमार लोगों के साथ धक्का-मुक्की होने से यह स्थान कृपाहीन बन गया था। अपने घर या मण्डली को कृपाहीन स्थान न बनने दें।

5:8-10. राज्यपाल नहेमायाह ने सारे व्यापारियों को सबत के दिन अपना सामान बेचने के लिए यरूशलेम में आने से रोक दिया (नहेमायाह 13:15-22)। लेकिन, यहूदी शिक्षकों ने सबत के दिन को पवित्र मानने की चौथी आज्ञा को बहुत से मानवीय नियमों में बदल दिया, जैसे कि वे सबत के दिन कोई सामान न उठाएं।

यीशु मसीह द्वारा दी गयी चेतावनियों के प्रति सावधान रहें कि "तुम अपनी परम्पराओं के कारण परमेश्वर के वचन को क्यों टाल देते हो",इस प्रकार की "उपासना व्यर्थ" है क्योंकि वे "मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।"(मत्ती 5:1-9)।

5:23. जिस तरह से तुम परमेश्वर पिता का आदर करते हो ठीक उसी प्रकार से परमेश्वर पुत्र का आदर करो। जो धर्म यीशु मसीह का आदर नहीं करता वह परमेश्वर का भी आदर नहीं करता।

- जो कोई मसीह का आदर करता है, परमेश्वर का आदर करता है(यूहन्ना 5:23)
- जो कोई मसीह को जानता है वह परमेश्वर को जानता है। (यूहन्ना 8:19)
- जो कोई मसीह पर विश्वास करता है वह परमेश्वर पर विश्वास करता है। (यूहन्ना 12:44)
- जो कोई मसीह को स्वीकार करता है परमेश्वर को स्वीकार करता है(यूहन्ना 13:20)
- जो कोई मसीह को ग्रहण करता है परमेश्वर को ग्रहण करता है(मत्ती 10:40)।
- जो कोई मसीह को अस्वीकार करता है परमेश्वर को अस्वीकार करता है(लूका 10:16)
- जो कोई मसीह को अस्वीकार करता है, वह परमेश्वर पिता के पास नहीं आता(यूहन्ना 14:6)
- जिसने मसीह को देखा है उसने परमेश्वर पिता को देखा है(यूहन्ना 14:9-10)।
- जो कोई मसही के बातों को मानता है, वह परमेश्वर से प्रेम करता है(यूहन्ना 14:21,23)
- जिसे परमेश्वर पिता यीशु को देता है, वह यीशु के पास आएगा और कोई उसे मसीह से अलग नहीं कर सकता (यूहन्ना 6:37,44; 17:2,6,9)।
- जो कोई मसीह को सम्मान करता है परमेश्वर का सम्मान करता है(यूहन्ना 2:23)।

5:24. सुसमाचार प्रचार करो! जो कोई सुसमाचार सुनता और उस पर विश्वास करता है, उसे उसी क्षण अनन्त जीवन प्राप्त हो जाता है, उसे न्याय के दिन न्याय सिंहासन के सामने खड़ा होना नहीं पड़ेगा क्योंकि वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

5:28-29.यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहें। तब सारे जीवित और मृतक परमेश्वर की आवाज़ सुनेगें और जितने मृतक हैं वे सब अनन्त दण्ड या अनन्त मुक्ति पाने के लिए अपनी अपनी कब्रों से बाहर निकल आएंगे।

5:31-47.सुनिश्चित करें कि आपने यीशु मसीह के सम्बन्ध में परमेश्वर पिता की गवाही प्राप्त की हो आप उस पर विश्वास करते हों ·

5:39. बाइबल का अध्ययन करे, क्योंकि यह यीशु मसीह की गवाही देती, और उद्धार प्राप्त करने के लिए आपको बुद्धिमान बनाती है(2 तीमुथीयुस 3:15)।
5:44. आपके लिए क्या ज़्यादा ज़रूरी है: अपने परिवार जनों,मित्रों और देशवासियों की ओर से प्रसंशा प्राप्त करना या अद्वैत परमेश्वर की ओर से प्रसंशा पाना?

2. यूहन्ना अध्याय 5 से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं यीशु के वचनों पर विश्वास करने का अभ्यास करना चाहता हूँ। जब यीशु ने लकवे के रोगी से कहा,"उठ! अपनी खाट उठाकर चल फिर!" लोगों को यह काम निश्चय ही असम्भव काम जान पड़ा होगा, लेकिन यीशु के लिए ऐसा करना असम्भव नहीं था। जब यीशु मुझे बाइबल से किसी बात की शिक्षा देते हैं तो इसका अर्थ है कि वे चाहते हैं कि वे बातें मेरे अपने जीवन में होनी चाहिए। उसके मुँह से निकले हुए वचन सामर्थी और प्रभावशाली होते हैं। वह जो कहता है वह कर सकता है और जो वह कहता है वह उसे करना चाहता है। इसीलिए, मैं उसके द्वारा कहे गये वचनों पर भरोसा करना चाहता हूँ। लकवे के रोगी के समान मैं अपनी असमर्थता का पूरी तरह बखान करूंगा। लेकिन उस बीमार के समान ही, यीशु मुझसे जो करने के लिए कहेंगे मैं वह काम करूँगा।

मैं यीशु मसीह के सम्बन्ध में दृढ़ता से अंगीकार करना चाहता हूँ कि वह परमेश्वर पिता के समान है। कोई भी जन परमेश्वर के स्वभाव को परिभाषित नहीं कर सकता। ऐसा करने के लिए उसे परमेश्वर से बढ़कर होना ज़रूरी है। जहां एक ओर परमेश्वर का मन एक समुन्द्र के समान विशाल है वहीं मनुष्य का मन मात्र एक प्याले के समान छोटा है। यद्यपि मैं परमेश्वर के स्वभाव को पूरी तरह नहीं समझ सकता हूँ, लेकिन मैं उसके बारे में वैसा ही अंगीकार करूंगा जैसा कि बाइबल में प्रगट किया गया है। पहले तो, मत्ती 28:19, यीशु कहते हैं कि विश्वासियों को परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा के "एक नाम में" बपतिस्मा दिया जाए। परमेश्वर का एक नाम है और वह एक आलौकिक सत्ता है, जिसने अपने आप को मानवीय इतिहास में तीन अलग अलग व्यक्तित्वों को ईश्वरी स्वभाव में समावेशित करके प्रगट किया है। यीशु मसीह इस आलौकिक स्वभाव का दूसरा ईश्वरीय व्यक्तित्व है। यूहन्ना 5:26 में, लिखा है कि परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को *अपने आप में* जीवन सौंप दिया है। इसका अर्थ है कि अनादिकाल से ही परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र दोनो का ही आलौकिक स्वभाव समान था।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 5:1-47 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में **लगातार प्रार्थना करें।** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 15:1-16:20** में से आधे अध्याय पर तथा **1 कुरिन्थियों के 1** अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

3.याद करें। **(5) नम्रता: फिलिप्पियों 2:3-4।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

4.बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। यूहन्ना 1:1-18। पाँच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।